एक कहानी कई रंग–**20** ः

शेर और खरगोश जैसी कहानियॉ

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Sher Aur Khargosh JaIsi Kahaniyan-20 (Lion and Rabbit Like Stories-20)
Cover Page picture : A Lion Peeping in the Well
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

एक कहानी कई रंग 5

शेर और खरगोश जैसी कहानियाँ 7

1 खरगोश और शेर 9

2 कुँए का चीता 16

3 चालाक खरगोश 20

4 गिलहरी और शेर 26

5 बबून, बन्दर और लोमड़ा 31

6 सिंह राजा और छोटे चालाक गीदड़ 34

7 चीता और खरगोश 38

एक कहानी कई रंग

लोक कथाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए कुछ समय पहले हमने संसार के सब देशों से कुछ लोक कथाऐं संकलित की थीं। उनको हमने "देश विदेश की लोक कथाऐं" सीरीज़ में प्रकाशित किया था। वे कथाऐं जब काफी संख्या में इकट्ठी हो गयीं, करीब करीब **2000,** तो उनमें एक तस्वीर देखी गयी। वह थी कि उनमें से कुछ कहानियॉ एक सी थीं और आपस में बहुत मिलती जुलती थीं।

तो लोक कथाओं की एक और सीरीज़ शुरू की गयी और वह है "एक कहानी कई रंग"। कितना अच्छा लगता है जब एक ही कहानी के हमें कई रूप पढ़ने को मिलते हैं। इन पुस्तकों में कुछ इसी तरह की कहानियॉ दी गयी हैं। सबसे पहले इसमें सबसे ज़्यादा लोकप्रिय कहानी दी गयी है और उसके बाद ही उसके जैसी दूसरी कहानियॉ दी गयी हैं जो दूसरी जगहों पर पायी जाती हैं। हम यह दावा तो नहीं करते कि हम वैसी सारी कहानियॉ यहॉ दे रहे हैं पर हमारी कोशिश यही रहेगी कि हम वैसी ज़्यादा से ज़्यादा कहानियॉ एक जगह इकट्ठा कर दें।

इस सीरीज़ में बहुत सारी पुस्तकें हैं जो यह बताती हैं कि केवल **2–4** कहानियॉ ही ऐसी नहीं हैं जो सारे संसार में कई जगह पायी जाती हों बल्कि बहुत सारी कहानियॉ ऐसी हैं जो अपने अपने तरीके से भिन्न भिन्न जगहों पर कही सुनी जाती हैं। इनमें सिन्डरैला, टाम थम्ब, बिल्ला और चुहिया, सोती हुई सुन्दरी, छह हंस[1] आदि मशहूर कहानियॉ दी गयी हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॉ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में यह जानने की प्रेरणा भी देंगी कि एक ही तरह की कहानी किस तरह से दूसरे देशों में पहुँची। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

[1] Cinderella, Tom Thumb, Cat and Rat, Sleeping Beauty, Six Swans etc stories

शेर और खरगोश जैसी कहानियॉ

हिन्दी में एक कहावत है "अक्ल बड़ी कि भैंस"। शेर और खरगोश की कहानी ऐसी ही कहावत को साबित करती है। जब यह कहावत कही जाती है तो लोग इसका जवाब देते हैं "अक्ल"।

शेर और खरगोश की यह कहानी बहुत पुरानी और एक बहुत ही लोकप्रिय कहानी है। यह कहानी घरों में माता पिता अपने बच्चों को दो ढाई साल की उम्र से ही सुनाना शुरू कर देते हैं। बहुत पसन्द आती है उनको यह कहानी। पर ऐसी कहानी केवल भारत में ही नहीं सुनायी जाती बल्कि और देशों में भी कही सुनी जाती है। आज हम इसी कहानी के कुछ रूप इकट्ठे कर के तुम्हारे लिये प्रस्तुत कर रहे हैं।

इन सब कहानियों में एक छोटे से जानवर ने जंगल के राजा शेर को मार कर जंगल के दूसरे जानवरों की जान बचायी है। कैसे? अपनी अक्ल से।

ये कथाऐं बहुत शिक्षाप्रद हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को सीख देने के अलावा तुम लोगों का भरपूर मनोरंजन भी करेंगी।

1 खरगोश और शेर[2]

यह कहानी अक्लमन्दी की एक ऐसी कहानी है जिसमें एक छोटा सा खरगोश अपनी अक्ल्मन्दी से जंगल के सारे जानवरों की जान बचाता है। कैसे? आओ पढ़ते हैं।

एक बार की बात है एक जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। उसी जंगल में एक शेर भी रहता था। वह मनमाना शिकार करता था और कितने भी जानवर कभी भी मार कर खा जाता था।

जंगल के सारे जानवर उसकी इस हरकत से बहुत परेशान थे। उसकी इस हरकत को रोकने के लिये उन्होंने आपस में एक मीटिंग की और सबसे सलाह मॉगी कि उन लोगों को क्या करना चाहिये ताकि शेर का जानवरों को अक्सर मारना रोका जा सके।

सो जंगल के सभी जानवरों ने उस मीटिंग में यह निश्चय किया कि — "बजाय इसके कि शेर किसी भी जानवर को कभी भी खाये अगर हम उसको हर हफ्ते एक जानवर और कुछ खाना भेज दिया करें तो कैसा रहे।"

सब जानवरों ने अपना यह निश्वय जंगल के राजा को बताया तो शेर तो बहुत खुश हो गया। उसको इससे ज़्यादा और क्या चाहिये था कि उसको घर बैठे पेट भर खाना मिल रहा था। वह तुरन्त ही राजी हो गया।

[2] A Rabbit and a Lion. Heard in my childhood – from India.

पर अब अपने आप जाये कौन? सो यह तय हुआ कि जानवर हर हफ्ते एक लौटरी निकालेंगे और जिसके नाम की लौटरी निकलेगी वही जानवर उस हफ्ते शेर के पास जायेगा। सब जानवर इस बात पर राजी हो गये क्योंकि और कोई दूसरा रास्ता नहीं था।

शेर को तो अब बहुत ही आसानी हो गयी। उसको घर बैठे हर हफ्ते खाना मिलने लगा। हर हफ्ते उसके पास एक जानवर और कुछ और खाना आ जाता और शेर उसको खा कर सारा दिन अपनी गुफा में पड़ा पड़ा सोता रहता।

अब वह भूखा भी नहीं रहता था और उसको अब शिकार के लिये कहीं बाहर भी नहीं जाना पड़ता था। इस तरह अब उसके दिन आराम से गुजरने लगे।

इधर जानवर हर हफ्ते लाटरी निकालते और जिस जानवर का नाम लाटरी में निकलता उसको शेर के पास भेज दिया जाता। वह जानवर बेचारा अपने परिवार को रोता बिलखता छोड़ कर शेर का खाना बन कर चला जाता।

एक दिन लाटरी में एक भालू का नाम निकला तो दूसरी बार एक बन्दर का। तीसरी बार एक हिरन का नाम निकला तो चौथी बार एक बारहसिंगे का।

इस तरह शेर और जानवर दोनों ही सुखी थे कि...

एक बार लौटरी में एक छोटे से खरगोश का नाम निकला। खरगोश चालाक था। पहले तो वह बोला — "मैं तो बहुत ही छोटा सा जानवर हूॅ। मुझ जैसे छोटे से जानवर को खा कर इतने बड़े शेर का क्या काम बनेगा। आप लोग किसी बड़े जानवर का नाम निकालें।"

पर जानवरों ने उसकी एक न सुनी और आखिरकार खरगोश को ही शेर का खाना बन कर शेर के पास जाना पड़ा। खरगोश था तो बहुत छोटा पर था बड़ा अक्लमन्द।

वह अभी मरना नहीं चाहता था सो वह शेर से बचने की कोई तरकीब सोचने लगा। सोचते सोचते उसको नींद आ गयी और वह सो गया।

खरगोश इतनी देर सोया, इतनी देर सोया कि उसका शेर के पास पहुॅचने का समय ही निकल गया। वह तो सोता ही रह गया था और उधर शेर अपने शिकार का इन्तजार कर रहा था।

उसको बहुत भूख लग रही थी पर उसे कोई भी जानवर ही आता दिखायी नहीं दे रहा था। धीरे धीरे शेर का गुस्सा बढ़ने लगा और गुस्से से वह अपनी गुफा में ही इधर से उधर चक्कर काटने लगा।

इतने में ही उसने देखा कि एक छोटा सा खरगोश हॉफता हुआ भागा चला आ रहा है।

उस छोटे से खरगोश को देख कर तो शेर का गुस्सा और भी बढ गया। एक तो उसका शिकार देर से आया और वह भी इतना छोटा सा।

खरगोश के आते ही वह उस पर बरस पड़ा — "ओ खरगोश के बच्चे, कहॉ रह गया था तू? इतनी देर से आ रहा है? मेरा तो भूख के मारे दम ही निकला जा रहा है।"

खरगोश गिरता पड़ता हॉफता शेर के सामने निढाल सा पड़ गया। कुछ पल बाद जब उसकी सॉस में सॉस आयी तो वह बोला — "राजा साहब राजा साहब, एक जंगल में एक ही तो शेर होता है न?"

शेर बोला — "यकीनन, एक जंगल में एक ही शेर होता है और वही उस जंगल का राजा होता है। जैसे मैं इस जंगल में एक अकेला शेर हूॅ और इस जंगल का राजा हूॅ।"

खरगोश बोला — "सरकार आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं। मैं भी यही सोचता था। पर हुआ क्या कि जब मैं आपके पास आ रहा था तो मुझे रास्ते में एक और शेर मिल गया। उसने मुझसे पूछा तुम कहॉ जा रहे हो तो मैंने कहा कि मैं अपने राजा के पास जा रहा हूॅ।

वह बोला — "पर इस जंगल का राजा तो मैं हूॅ तुम किस राजा के पास जा रहे हो? मैंने कई दिनों से कुछ खाया नहीं है मुझे बहुत भूख लगी है। अब मैं तुमको खाऊॅगा।"

"सरकार, जैसे तैसे मैं उस शेर से अपनी जान बचा कर भागा चला आ रहा हूॅ।"

यह सुन कर तो शेर आग बबूला हो गया। वह गुस्से से लाल पीला हो कर बोला — "क्या कहा तुमने, तुमने दूसरा शेर देखा? अभी चल कर दिखाओ मुझे कि कहॉ है वह दूसरा शेर। मैं उसे जान से मार डालूॅगा। इस जंगल का राजा मैं हूॅ और केवल मैं ही इस जंगल में रहूॅगा।"

खरगोश खुश हो कर बोला — "चलिये राजा साहब, जल्दी चलिये। कहीं ऐसा न हो कि वह कहीं भाग जाये।"

शेर अपनी भूख तो भूल गया और तुरन्त ही खरगोश के पीछे पीछे चल दिया।

खरगोश शेर को एक कुॅए के पास ले गया और इधर उधर देखता हुआ बोला — "अरे, अभी अभी तो मैं उसे यहीं छोड़ कर गया था कहॉ चला गया।

उसे तो यहीं होना चाहिये था पर कहीं दिखायी नहीं दे रहा। ऐसा लगता है कि आपको आता देख कर वह इस कुॅए में छिप गया है।"

शेर को भी कुछ ऐसा ही लगा। उसने खरगोश से कहा — "ज़रा कुॅए में झॉक कर तो देखो कि वह शेर वहॉ है कि नहीं।"

खरगोश डरने का नाटक करता हुआ बोला — "सरकार, मैं नहीं देख सकता, मुझे डर लगता है।"

शेर बोला — "ठीक है मैं ही देखता हूँ उसको कि वह कहॉ छिपा बैठा है। आज मैं उसे ज़िन्दा नहीं छोड़ूँगा।"

ऐसा कह कर वह उस कुँए की जगत पर बैठ कर कुँए में झॉकने लगा और बोला — "अरे ओ शेर, कहॉ है तू? कहॉ छिपा बैठा है? हिम्मत है तो निकल कर बाहर आ और मेरा सामना कर।"

ऐसा कह कर उसने जो कुँए में झॉका तो कुँए के पानी में उसको अपनी परछॉई दिखायी दी। उसने समझा कि वही दूसरा शेर है। खरगोश की बात सही जान कर उसका पारा तो सातवें आसमान पर चढ़ गया।

वह बोला — "अच्छा तो तू यहॉ छिप कर बैठा है। चल बाहर निकल। डरपोक कहीं का।"

अब बच्चों, कुँए में तो आवाज गूँज जाती है सो शेर की आवाज भी गूँज गयी — "अच्छा तो तू यहॉ छिप कर बैठा है। चल बाहर निकल। डरपोक कहीं का।"

शेर को लगा कि दूसरा शेर उसको ललकार रहा है। सो उसने फिर कहा — "मैं नहीं तू बाहर आ। तू मेरे डर से छिपा बैठा है।"

और उसकी यह आवाज भी गूँज गयी।

इस ललकार से उसको इतना अधिक गुस्सा आया कि वह बोला — "अच्छा तो यह ले, सॅभल, मैं आ रहा हूॅ।"

और यह कहते के साथ ही वह उस कुॅए में कूद गया उस शेर को मारने के लिये।

पर वहॉ दूसरा शेर तो कोई था नहीं वहॉ तो केवल उसकी अपनी परछाईं ही थी सो वह कुॅए में गिरते ही मर गया।

यह देख कर खरगोश खुशी खुशी घर वापस आ गया।

उधर खरगोश की पत्नी, बच्चे और माता पिता बहुत दुखी थे। वे सोच रहे थे कि अब वे खरगोश को कभी नहीं देख पायेंगे। पर खरगोश को खुशी खुशी घर वापस आता देख कर वे आश्चर्य में पड़ गये कि खरगोश मौत के मुॅह में से वापस कैसे आ गया।

खरगोश ने आ कर सबको अपनी कहानी सुनायी। जंगल के सब जानवर खरगोश की अक्लमन्दी की कहानी सुन कर बहुत खुश हुए कि अब उनमें से किसी को भी शेर के पास नहीं जाना पड़ेगा।

तो बच्चो, इस प्रकार एक छोटे से खरगोश ने अपनी अक्लमन्दी से जंगल के सारे जानवरों की जान बचायी।

2 कुँए का चीता[3]

एक बार एक चीता जंगल में आया और चिल्लाया — "मैं बहुत भूखा हूँ, मुझे बहुत भूख लगी है।" यह सुन कर जंगल में रहने वाले तो सारे जानवर कॉप गये।

चीता गुर्राया — "डरते क्यों हो। अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम लोगों को इस तरह से न खाऊँ तो तुम लोग खाने के लिये मुझे एक जानवर रोज भेजोगे। और अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो मैं तुम सबको खा जाऊँगा।"

सब जानवरों ने आपस में बात की कि जो यह चीता कहता है हमें वह कर देना चाहिये नहीं तो यह हम सबको खा जायेगा। पर सबसे पहले किस जानवर को चीते के पास खाने के लिये भेजा जाये।

हिरन बोला — "मुझे नहीं।"

बकरी बोली — "मुझे नहीं।"

भेड़िया बोला — "मुझे नहीं।"

खरगोश बोला — "मैं जाऊँगा चीते के पास। और तुम लोग देखोगे कि चीता हममें किसी को नहीं खायेगा।"

---

[3] The Tiger in the Well – a folktale from Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=163
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
[This story is very common and is told and heard in many countries in many flavors.]

कह कर वह कूद कर थोड़ी दूर तक गया और बहुत देर तक इधर उधर घूमता रहा जब तक कि वह पसीने से लथपथ नहीं हो गया। फिर वह चीते के पास दौड़ गया जहॉ वह अपने खाने के लिये किसी जानवर के आने का इन्तजार कर रहा था।

खरगोश चीते से बोला — "चीते जी चीते जी। मुझे बहुत अफसोस है कि मुझे आने में कुछ देर हो गयी। हुआ क्या कि मुझे रास्ते में एक दूसरा चीता मिल गया सो उस चीते से किसी तरह अपने आपको छुड़ा कर मुझे आपके पास आना पड़ा।

वह मुझे खाना चाहता था पर मैंने कहा कि तुम मुझे नहीं खा सकते क्योंकि मैं तो आपका खाना हूॅ। बड़ी मुश्किल से किसी तरह मैं उससे जान बचा कर भागा आ रहा हूॅ।"

चीता बोला — "दूसरा चीता? कौन सा दूसरा चीता? यहॉ कोई और भी चीता रहता है क्या?"

खरगोश बोला — "वह दूसरा चीता तो बहुत बड़ा था चीते जी। आपसे भी बहुत बड़ा। पर अब तो मैं उससे पीछा छुड़ा कर आ ही गया हूॅ सो अब आप मुझे खा सकते हैं।"

चीते ने पूछा — "क्या वह मुझसे भी बड़ा है?"

खरगोश फिर बोला — "जी हॉ सरकार, वह तो आपसे भी बड़ा है। वह मुझे खाना चाहता था पर मुझे उसे बहुत समझाना पड़ा कि मैं तो आपका खाना हूॅ। अब आप मुझे जल्दी से खा लीजिये नहीं तो अगर वह यहॉ भी आ गया तो... ।"

चीता कुछ सोच कर बोला — "अगर तुम मुझे उस दूसरे चीते को दिखा दो तो मैं तुम्हारी ज़िन्दगी बख्श दूँगा।"

खरगोश बोला — "चलिये मैं अभी आपको उसके पास ले चलता हूँ। अभी तो वह वहीं होगा जहॉ मैं उसे छोड़ कर आया था।"

और यह कह कर वह उसको एक कुँए पर ले गया।

फिर बोला — "आप इस कुँए में झॉक कर देखिये तो आपको वह दूसरा चीता दिखायी दे जायेगा।"

चीते ने उस कुँए में झॉका तो उस कुँए की तली में उसको एक चीता दिखायी दिया। कम से कम उसको ऐसा लगा कि उस कुँए में एक चीता था।

जंगल के चीते ने पूछा — "तुम यहॉ क्या कर रहे हो?"

कुँए में से एक आवाज आयी — "तुम यहॉ क्या कर रहे हो?"

"यह मेरा जंगल है।"

"यह मेरा जंगल है।"

"नहीं, यह तुम्हारा नहीं मेरा जंगल है।"

"नहीं, यह तुम्हारा नहीं मेरा जंगल है।"

"मैं तुम्हें खा जाऊँगा।"

"मैं तुम्हें खा जाऊँगा।"

इस तरह जंगल का चीता ऊपर से चिल्लाता रहा और उसकी अपनी आवाज कुँए में से गूँज गूँज कर उसके पास तक वापस आती रही।

उसके ये जवाब उसको गुस्सा दिलाते रहे। जब उसको बहुत गुस्सा आ गया तो वह कुँए वाले चीते को खाने के लिये कुँए में कूद पड़ा और मर गया।

खरगोश खुशी खुशी कूदता हुआ यह खबर जंगल के दूसरे जानवरों को सुनाने चला आया। चीते के मरने पर जंगल में बहुत खुशियॉ मनायी गयीं और खरगोश की बहुत तारीफ की गयी।

3 चालाक खरगोश[4]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के पश्तो भाषा बोलने वाली जगहों के लोगों की लोक कथाओं से ली गयी है। पश्तो भाषा ज़्यादातर तो भारत के पश्चिम में स्थित अफगानिस्तान में बोली जाती है पर यह भाषा पश्चिमी पाकिस्तान में भी बोली जाने वाली मुख्य भाषाओं में से भी एक है।

एक बार की बात है कि एक गहरे जंगल में एक चीता[5] रहता था जो अपने खाने के लिये हमेशा शिकार की तलाश में रहता था। इसलिये जंगल के दूसरे जानवर उससे हमेशा डरे डरे रहते थे।

उनको दिन रात यही डर लगा रहता कि वह पता नहीं वह बड़ा भयानक चीता कब किसको मार कर खा जायेगा।

इसके अलावा वह जंगल के सब जानवरों में सबसे बड़ा और ताकतवर जानवर भी तो था।

उससे हिरन भी डरते थे सूअर भी डरते थे यहॉ तक कि उससे बन्दर भी डरते थे पर उस भयानक चीते के बारे में कुछ भी नहीं किया जा सकता था।

[4] The Cunning Rabbit – A folktale from Pashto language speaking area (Afghanistan and Western Pakistan), Asia. Adapted from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/279/preview

[5] Translated for the word “Tiger”. See its picture above.

केवल एक जानवर ऐसा था जो उससे नहीं डरता था और वह था चालाक खरगोश।

खरगोश जमीन के नीचे एक बिल में रहता था और अपने खाने के लिये तभी निकलता था जब उसको यह यकीन होता था कि अब आस पास में चीता नहीं है या फिर वह सो रहा है और जंगल में घूमना सुरक्षित है।

यह खरगोश बहुत ही दयालु और दानवीर खरगोश था। उसको जंगल के उन जानवरों के लिये बहुत अफसोस होता था जिनको उस भयानक चीते से हमेशा डर कर रहना पड़ता था।

एक दिन जंगल के सारे जानवरों ने एक जगह मीटिंग की तो बन्दरों ने पूछा "हम इस चीते के बारे में क्या करें?"

सूअर बोले "हम तो इससे डरते डरते भी थक गये हैं।"

तब वह चालाक खरगोश उठा और सब जानवरों के सामने आ कर बोला — "आप सब उसकी चिन्ता छोड़ें उसको मेरे ऊपर छोड़ दें मैं उसको देख लूँगा। बहुत जल्दी ही हम सब निडर हो कर रह पायेंगे।"

यह सुन कर जानवरों को कुछ राहत मिली। वे खरगोश के बहुत कृतज्ञ थे कि कम से कम उसने उनको किसी ने विश्वास तो दिलाया कि वह चीते को देखेगा। हालॉकि उनको विश्वास नहीं था कि वह इतना छोटा सा जानवर इतने बड़े और भयानक चीते के बारे में कुछ कर पायेगा।

उन्होंने कहा — "खरगोश भाई तुम तो इतने छोटे से हो फिर तुम इतने बड़े भयानक और लम्बे जानवर से कैसे निपटोगे?"

चालाक खरगोश बोला — "तुम लोग ज़रा इन्तजार करो और देखो कि मैं क्या करता हूँ?"

कहता हुआ वह उछलता कूदता चीते के घर की तरफ गहरे जंगल में भाग गया। जब चालाक खरगोश चीते के घर के पास पहुँचा तो वह बहुत डरा हुआ था पर अपने इरादों में पक्का भी बहुत था कि अबकी बार उसको जानवरों की सहायता करनी ही है।

चालाक खरगोश ने अपनी सारी बहादुरी इकट्ठी कर के चीते से कहा — "चीते जी मैं आपसे एक बात कहने आया हूँ वह यह कि एक आपसे भी बड़ा और भयानक चीता जंगल में मौजूद है।"

यह सुन कर चीता गरजा — "यह नहीं हो सकता। इस जंगल में तो बस मैं ही सबसे बड़ा और भयानक चीता हूँ। और इस बात को साबित करने के लिये मैं तुम्हें अभी खा जाऊँगा।"

चालाक खरगोश यह सुन कर कुछ डर गया पर फिर सँभल कर बोला — "पर मैं सच कह रहा हूँ चीते जी। इस चीते ने तो मेरे भाई को भी पकड़ लिया है और साथ में मुझे भी चेतावनी दी है कि मैं जंगल के सभी जानवरों से यह कह दूँ कि वह जंगल के किसी भी उस जानवर को चुनौती देगा जो यह कहेगा कि वह उससे भी बड़ा और ताकतवर है।"

यह सुन कर तो चीते को बहुत गुस्सा आया। गुस्से में आ कर वह बोला — "दिखाओ मुझे कहॉ है वह दूसरा चीता फिर मैं देखता हूॅ कि दोनों में कौन बड़ा और ज़्यादा भयानक है।"

खरगोश डरता हुआ बोला — "अगर मैं आपको उस चीते के पास ले चलूॅ तो क्या आप मुझसे वायदा करते हैं कि आप मुझे और मेरे भाई को नहीं खायेंगे?"

चीता बोला — "हॉ मैं वायदा करता हूॅ कि मैं तुम दोनों को ही नहीं खाऊॅगा।"

और चालाक खरगोश और चीता दोनों ही जंगल में से हो कर चल दिये। कुछ देर बाद खरगोश उछल कर जमीन पर बैठ गया और ऐसा दिखाने लगा जैसे वह बहुत थक गया हो।

चीते ने पूछा — "अरे क्या हुआ?"

खरगोश बोला — "मैं चलते चलते थक गया हूॅ क्या आप मुझे उठा कर ले जा सकते हैं?"

चीता खरगोश को उठा कर ले जाने के लिये राजी हो गया। उसने उसको अपने बड़े से पंजे में उठा लिया और फिर से जंगल की यात्रा शुरू कर दी।

थोड़ी ही देर में चीता और खरगोश जंगल की एक साफ जगह पहुॅच गये जहॉ एक बहुत गहरा कुॅआ था।

उस कुॅए में पानी भी था। चालाक खरगोश बोला — "वह चीता जो अपने आपको आपसे भी बड़ा और भयानक कहता था वह इसी कुॅए में नीचे रहता है।"

चीते ने पूछा — "और उसके पास तुम्हारा भाई भी है।"

खरगोश बोला — "जी हॉ है। पर आप हम दोनों को नहीं खायेंगे क्योंकि आपने मुझसे वायदा किया है।"

चीता हॅसा और धीरे से कुॅए के किनारे की तरफ खिसक गया। कुॅए के किनारे पर पहुॅच कर उसने कुॅए में झॉका तो उसको अपनी और अपने पंजे में पकड़े हुए खरगोश की परछाईं कुॅए के पानी में दिखायी दी।

यह देख कर उसने सोचा कि वह दूसरा चीता है जो अपने आपको बहुत बड़ा और भयानक कह रहा था ओर उसके पंजे में उस खरगोश का भाई है।

चालाक खरगोश तुरन्त बोला — "चीते जी आप अपना वायदा रखियेगा कि आप मेरे भाई को उससे बचायेंगे।"

चीता गरजा — "मैं ऐसा बेवकूफी का कोई काम नहीं करने वाला। मैं तुम्हें और तुम्हारे भाई दोनों को खा जाऊॅगा फिर मैं इस चीते से लड़ूॅगा जो मेरे जंगल में मुझ ही को चुनौती देता है।"

पर जैसे ही बड़े और भयानक चीते ने ऐसा कहा चालाक खरगोश उसके पंजे निकल कर भाग गया। चीते को यह पता ही

नहीं चला कि वह कुँए में नीचे पानी में अपनी ही परछाईं देख रहा था।

सो उस बड़े और भयानक चीते ने यह सोचते हुए उस कुँए में छलॉग लगा दी कि वह उस दूसरे चीते को मारने जा रहा है। लेकिन वहॉ तो दूसरे चीते की बजाय उसको केवल ठंडा पानी ही मिला।

वह वहॉ जा कर वहॉ से बाहर निकलने की कोशिश करने लगा पर उसे कोई तरकीब ऐसी दिखायी नहीं दी जिससे वह वहॉ से बाहर आ जाता।

चालाक खरगोश ऊपर से चिल्लाया — "चीते जी आप बड़े भयानक और ताकतवर जानवर हो सकते हैं पर मैं सबसे ज़्यादा होशियार जानवर हूँ।"

यह कह कर खरगोश चीते को वहीं कुँए में छोड़ कर अपनी मीटिंग की जगह चला आया। वहॉ आ कर उसने सब जानवरों को बताया कि किस तरह से उसने चीते को कुँए में बन्द कर दिया है। अब तुम लोग बिना किसी डर के जंगल में रह सकते हो।

सारे जानवर यह सुन कर बहुत खुश हुए और खरगोश के बहुत कृतज्ञ हुए। उस रात वहॉ एक बहुत बड़ा जश्न मनाया गया क्योंकि उस समय से वह जंगल अब चीते से पूरी तरीके से सुरक्षित था।

4 गिलहरी और शेर[6]

एक बार जंगल के जानवरों ने देखा कि शेर उनमें से बहुत से जानवरों को खा गया है और उनके जानवर कम होते जा रहे हैं।

यह देख कर उन्होंने आपस में एक मीटिंग बुलायी और कहा — "देखो भाइयो अगर हम लोग ज़िन्दा रहना चाहते हैं तो हमें अपने बचाव की कोई न कोई तरकीब जरूर सोचनी होगी नहीं तो यह शेर एक दिन हम सबको खा जायेगा।"

एक जानवर बोला — "अगर हम शेर जी को एक जानवर रोज भेज दिया करें तो शायद शेर जी के जानवरों के मारने में कुछ कमी हो जाये।"

ऐसा सोच कर इस मीटिंग के बाद वे सब मिल कर शेर के पास गये। उन्होंने शेर से कहा — "हे जंगल के राजा, हम सब आपसे एक प्रार्थना करने आये हैं। वह यह कि अगर हममें से एक जानवर आपके खाने के लिए रोज सुबह आपके पास आ जाया करे तो बाकी जानवरों को आप छोड़ दें।"

शेर को उनकी यह प्रार्थना पसन्द आयी वह बोला — "ठीक है, मैं ऐसा ही करूँगा।"

---

[6] The Squirrel and the Lion – a folktale from Africa.
[My Note: This story is told by African children but our Indian children also tell and hear this story. The only difference between them is that in Indian story this job is done by a rabbit not by squirrel.]

शेर को उनकी यह प्रार्थना इसलिये भी पसन्द आयी क्योंकि इस तरह उसको तो घर बैठे खाना मिल रहा था और जानवर इसलिये खुश थे कि शेर अब बहुत सारे जानवरों को एक साथ नहीं खायेगा।

सभी जानवर खुशी खुशी अपने अपने घरों को वापस लौट गये और आ कर रोज एक परची निकालने लगे। अब परची से जिस जानवर का भी नाम निकलता उसको शेर के पास सुबह होते ही भेज दिया जाता।

पहली बार भैंसे का नाम निकला सो उसको पकड़ कर शेर के पास भेज दिया गया। दूसरे दिन बारहसिंगे की बारी आयी तो उसको भी पकड़ कर शेर के पास भेज दिया गया।

इस तरह जानवर रोज परची निकालने लगे और शेर को अब रोज घर बैठे ही खाना मिलने लगा। अब उसको शिकार के लिए बाहर नहीं निकलना पड़ता था। शेर भी खुश था और जानवर भी खुश थे।

लेकिन एक दिन यह परची गिलहरी के नाम निकली। जानवरों ने उसे पकड़ा और उसको शेर के पास ले जाने लगे तो गिलहरी बोली — "आप लोग मुझे छोड़ दें मैं अपने आप ही शेर के पास चली जाऊँगी।"

जानवर मान गये और उन्होंने उसको छोड़ दिया। गिलहरी अपने घर चली गयी और अगले दिन दोपहर तक सोती रही।

उधर शेर को बहुत तेज़ भूख लगी थी। वह परेशान सा झाड़ियों के आस पास घूमता रहा और खाने के लिये कुछ कुछ ढूँढता रहा।

तीसरे पहर गिलहरी उठी और शेर की मॉद की तरफ चली। वहॉ जा कर उसने देखा कि शेर तो पागलों की तरह इधर उधर घूम रहा है। उसको यह देख कर बड़ा मजा आया। वह एक पेड़ पर चढ़ गयी और शेर से बोली — "आप इतने परेशान क्यों हैं शेर जी।"

शेर बोला — "मैं सुबह से खाने का इन्तजार कर रहा हूँ और तुम लोगों ने अभी तक मेरे खाने के लिए कुछ भी नहीं भेजा है।"

गिलहरी बोली — "ओह शेर जी, वह ऐसा हुआ कि आज जब हम लोगों ने परची निकाली तो उस परची में मेरा नाम निकला।

मैं आपके लिए शहद भरा प्याला ले कर चली आ रही थी कि रास्ते वाले कुँए के पास मुझे एक और शेर मिल गया। वह मेरे हाथ से शहद का प्याला छीन कर भाग गया।"

शेर तो यह सुन कर गुस्से में भर गया और बीच में ही बात काट कर बोला — "अच्छा दूसरा शेर? मगर वह दूसरा शेर है कहॉ?"

गिलहरी बोली — "वह तो अन्दर कुॅए में है पर वह आपसे बहुत ज़्यादा ताकतवर है।"

यह सुन कर तो शेर को और अधिक गुस्सा आ गया और उसके तन बदन में आग सी लग गयी।

वह गिलहरी से बोला — "चलो, मुझे दिखाओ उस शेर को। वह मुझसे ज़्यादा ताकतवर कैसे हो सकता है। मैं अभी मारता हूॅ उस शेर को।"

गिलहरी शेर को साथ ले कर उस कुॅए तक आयी जिसमें उसने बताया था कि वह दूसरा शेर छिपा हुआ है। शेर ने उस कुॅए में झॉका।

कुॅए में उसको अपनी परछाईं दिखायी दी तो उसे लगा कि गिलहरी तो सच ही कह रही थी। वहॉ तो सचमुच ही दूसरा शेर उस कुॅए में बैठा उसे घूर रहा था।

उसने आव देखा न ताव बस उस शेर पर हमला कर दिया। वह उस कुॅए में कूद गया और कूदते ही डूब कर मर गया।

गिलहरी अपने घर वापस चली गयी और जा कर जानवरों से बोली — "मैंने आज शेर को मार दिया है इसलिये आप सब आज से आजाद हैं। अब आप आराम से रहें। मैं अपने घर चली।"

यह सुन कर सभी जानवरों को बड़ा आश्चर्य हुआ वे सब एक साथ बोले "कैसे?"।

तब गिलहरी ने उनको अपनी सारी कहानी सुनायी।

फिर सभी एक साथ बोले — "किसी ने सच ही कहा है अक्लमन्दी ताकत से बड़ी होती है। देखने में छोटी सी गिलहरी ने अपनी अक्लमन्दी से इतने बड़े शेर को मार दिया।"

5 बबून, बन्दर और लोमड़ा[7]

एक बार की बात है कि एक सरदार शेर के घर में एक बबून एक बन्दर और एक लोमड़ा रहते थे। जब भी उनको कुछ लाने के लिये भेजा जाता तो बबून और लोमड़ा तो भारी बोझा ढोते पर बन्दर हमेशा ही ऐसा करने से बच जाता।

एक दिन तीनों सरदार का कुछ सामान लाने के लिये गये। हर बार की तरह से बबून और लोमड़े ने बहुत सामान ढोया पर बन्दर का सामान बहुत हल्का था।

जब वे एक झाड़ी के पास पहुॅचे तो बबून और लोमड़े ने मिल कर आपस में सलाह की कि इस बन्दर से कैसे छुटकारा पाया जाये।

जब वे घर आ गये तो बबून और लोमड़ा पहले आये और बन्दर पीछे पीछे आया। बबून और लामड़े ने आ कर शेर सरदार से पूछा — "सरदार शेर आप नंगे पैर क्यों हैं। आपने जूते क्यों नहीं पहने हुए हैं। गॉव के सारे जूते तो बन्दर के बनाये हुए हैं। तो जब वह आये तो आप उससे अपने लिये कुछ जूते बनाने के लिये कहिये न। वह आपके लिये बहुत सुन्दर जूते बना देगा।"

[7] The Baboon, the Monkey and the Fox – A Gambela folktale from Ethiopia. Taken from : http://ethiopianfolktales.com/en/gambela/109-the-baboon-the-monkey-and-the-fox

सो शेर सरदार ने बन्दर को बुलाया और उससे कहा कि वह उसको बिना जूते के रख कर क्यों तंग कर रहा है। वह उसके लिये भी कुछ जूते बना दे।

बन्दर ने जब यह सुना तो वह तो बड़े सोच में पड़ गया क्योंकि उसको तो जूते बनाने आते नहीं थे। यह बात वह शेर सरदार से कहने में भी डरता था क्योंकि इससे शेर सरदार गुस्सा हो सकता था।

उसने सोचा उसके खिलाफ यह चाल किसकी हो सकती है। वह ताड़ गया कि यह आग बबून और लोमड़े की लगायी हुई है। सो वह बोला — "मैं आपके जूते बना तो दूँगा पर उनको बनाने के लिये बबून की खाल और लोमड़े की रीढ़ की हड्डी की जरूरत पड़ेगी।"

सो बबून और लोमड़ा मार दिये गये। उनकी खाल निकाल कर बन्दर को दे दी गयी। बन्दर ने उनको मुलायम करने के लिये पानी में डाल दिया। बन्दर ने उनको बहुत गहरे पानी में डाला था। फिर वह अपनी परछाईं तीन दिन तक देखता रहा।

तीन दिन बाद शेर सरदार ने उसे बुला कर कहा — "अब तक तो खाल बहुत मुलायम हो गयी होगी अब तो उसके जूते बन सकते होंगे। सो बन्दर नदी की तरफ गया तो वहॉ जा कर फिर से पानी में अपनी परछाईं देखी तो उसके दिमाग में एक ख्याल आया।

वह दौड़ा दौड़ा शेर सरदार के पास गया और बोला — "अभी जब मैं नदी में से खालें देखने के लिये गया तो मैंने देखा कि पानी में तो आप जैसा एक बहुत बड़ा शेर छिपा हुआ है जो मुझे खाना चाहता है। आप भी चल कर उसे देखें न।"

यह सुन कर शेर को बड़ा ताज्जुब हुआ कि इस जंगल कोई और भी शेर है। वह तुरन्त ही बन्दर के साथ उसको देखने के चल दिया। जब वे नदी के किनारे आये तो बन्दर तो थोड़ा पीछे रह गया और शेर ने अपनी परछाईं पानी में देखी।

वह उसके ऊपर गुर्राया तो उसकी परछाईं भी उसके ऊपर गुर्रायी। बस शेर अपनी गुर्राहट का यह जवाब सुन कर गुस्से के मारे नदी में कूद गया और मर गया।

6 सिंह राजा और छोटे चालाक गीदड़[8]

एक बार की बात है कि एक बड़े जंगल में एक बड़ा शेर रहता था। वह उस जंगल का राजा था। वह हर दिन अपनी मॉद में से निकलता और बहुत ज़ोर से दहाड़ता हुआ पहाड़ियों की तरफ चला जाता।

जब वह इस तरह से दहाड़ता तो जंगल के सारे जानवर जो उसकी प्रजा थे बहुत डर जाते और डर के मारे इधर उधर भाग जाते। पर सिंह राजा उनको किसी तरह दबोच ही लेता मार देता और उनको खा जाता।

यह सब बहुत दिनों तक चलता रहा। तब तक चलता रहा जब तक जंगल में कोई भी ज़िन्दा जानवर नहीं बचे सिवाय दो छोटे छोटे गीदड़ों के – एक राजा गीदड़ दूसरी रानी गीदड़ी – एक पति और पत्नी।

उन दोनों गीदड़ों का समय बड़ी मुश्किल से गुजर रहा था। वे हर समय उस भयानक शेर से इधर उधर बचते भागते रहते। रानी गीदड़ी रोज अपने पति से कहती — "मुझे बहुत डर लगता है। वह

[8] Singh Raja and Cunning Little Jackals. Taken from : "Old Deccan Days or Hindoo Fairy Legends: current in Southern India". By Mary Frere. Originally published in 1868 (5th impression, London: John Murray. 1898). 24 tales. This book's Reprint is available in English at : : https://en.wikisource.org/wiki/Old_Deccan_Days This book is available in Hindi from Sushma Gupta.

शेर हमें यकीनन किसी न किसी दिन पकड़ ही लेगा। ओह प्रिय। तुम कुछ करो न।"

राजा गीदड़ जवाब देता — "तुम बिल्कुल डरो नहीं। मैं तुम्हारी देखभाल कर रहा हूँ न। चलो एक दो मील भाग कर आते हैं। आओ जल्दी जल्दी आओ।" और फिर दोनों बहुत ज़ोर से भाग जाते।

इस तरह से कुछ दिन और निकल गये। पर एक दिन उन्होंने देखा कि शेर उनके इतना पास आ गया था कि वह आज उससे बच कर भाग नहीं सकते थे।

छोटी रानी गीदड़ी ने कहा — "प्रिय। मुझे बहुत डर लग रहा है। राजा शेर तो बहुत गुस्से में दिखायी दे रहा है आज तो वह यकीनन ही हमें खा जायेगा। अब हम क्या करें।"

राजा गीदड़ बोला — "प्रिये। तुम बिल्कुल नहीं डरो। खुश रहो। हम अभी भी इससे बचने की कोई तरकीब सोच सकते हैं। आओ चलो देखो कि हम इससे कैसे बचते हैं।"

सो इन चालाक गीदड़ों ने क्या किया कि वे उस बड़े शेर की मॉद में गये। जब उस शेर ने इनको आते देखा तो वह बहुत ज़ोर से दहाड़ा और अपनी गर्दन के बालों को झटकने लगा।

वह बोला — "ओ नीच जानवरों आओ आज मैं तुम्हें खाऊँगा। मैंने तीन दिन से खाना नहीं खाया है। मैं इन सारे दिनों

पहाड़ और घाटियों में घूमता रहा हूॅ पर तुम लोगों का कहीं कोई पता ही नहीं था। आओ आओ आज मैं तुम्हें खाऊॅगा।"

कह कर उसने अपनी पूॅछ फटकारी और अपने दॉत किटकिटाये। वह सचनुच में बहुत ही भयानक लग रहा था।

तब राजा गीदड़ उसके पास पहुॅचा और बोला — "हम सब जानते हैं कि आप ही हमारे मालिक हैं। हम तो आपके बुलाने पर पहले ही आ जाते पर इस जंगल में आपसे बड़ा भी एक राजा है। उसने हमको पकड़ कर खाना चाहा और हमको इतना डराया कि हमको यहॉ से भागना पड़ गया।"

सिंह राजा दहाड़ा — "यह तुम क्या कह रहे हो। मेरे सिवा इस जंगल में और कोई राजा नहीं है।"

गीदड़ बोला — "आह सर। सच में तो हर एक को यही सोचना चहिये क्योंकि आप तो बहुत ही खूॅख्वार हैं। पर है वैसा ही जैसा कि हम कह रहे हैं। क्योंकि हमने आज एक और शेर देखा है जिसे आप नहीं हरा सकते।

उसके आगे आप ऐसे ही है जैसे हम आपके सामने हैं। उसके मुॅह से आग निकलती रहती है। जब वह चलता है तो उसके पैरों से बिजली सी चमकती है और वह बहुत ताकतवर है।"

बूढ़ा शेर बीच में ही बोला — "यह नामुमकिन है। जिस शेर के बारे में तुम इतना बड़ा बड़ा बोल रहे हो इस राजा को मुझे दिखाओ ताकि मैं उसे तुरन्त ही मार सकूॅ।"

उस शेर को दिखाने के लिये गीदड़ और गीदड़ी दोनों वहॉ से एक कुँए की तरफ भाग गये। वहॉ पहुँच कर उन्होंने उससे कहा कि वह शेर उस कुँए में छिपा बैठा है। सिंह राजा ने उसमें झॉका तो उसे उसमें अपनी परछाईं दिखायी दी जिसे देख कर वह बहुत गुस्सा हुआ।

वह उसको देख कर फिर दहाड़ा और अपनी गर्दन के बाल हिलाये और गुस्से में आ कर कुँए में कूद पड़ा। पर वहॉ तो कोई शेर नहीं था। वहॉ तो केवल उसकी परछाईं थी।

कुँआ बहुत गहरा था सो वह दोनों गीदड़ों को सजा देने के लिये उसमें से बाहर ही नहीं निकल सका। कुछ देर तक तो वह वहॉ से बाहर निकलने की कोशिश करता रहा पर फिर वहॉ बहुत देर रहने की वजह से मर गया।

छोटे गीदड़ों ने फिर उसमें ऊपर से पत्थर और फेंक दिये और बहुत देर तक कुँए के चारों तरफ नाचते रहे — "आहा जंगल का राजा मर गया। जंगल का राजा मर गया। हमने उसे मार दिया है अब हमें कौन मारेगा।

7 चीता और खरगोश[9]

एक बार एक जंगल में एक बहुत भयानक चीता रहता था जो अक्सर अपने आनन्द के लिये दूसरे जानवरों का शिकार किया करता था चाहे उसे भूख होती या नहीं होती। इससे जंगल के सारे जानवर बहुत तंग थे। एक दिन उन सबने मिल कर एक सभा की और उसमें अपनी परेशानी रखी।

गीदड़ बोला — "इस बात के लिये तो हम सब एक राय हैं कि हमको एक जानवर रोज चीते को देना चाहिये नहीं तो वह तो ऐसे ही रोज पता नहीं कितने जानवरों को मारता रहेगा।"

दूसरे जानवर बोले — "हॉ तुम्हारी यह राय ठीक है। पर पहले हमको चीते से मिलना चाहिये और उसे यह बात बतानी चाहिये कि वह इस बात पर राजी है या नहीं।"

सो वे सब चीते की मॉद तक चल दिये और वहॉ जा कर बड़ी नम्रता से उससे विनती की कि वह इस तरह से जानवरों को न मारे। वे उसके लिये एक जानवर रोज भेज दिया करेंगे और उसे उसी से तसल्ली कर लेनी चाहिये। उसे रोज ही उन्हें इस तरह से नहीं मारना चाहिये। इससे उसकी परेशानी भी बच जायेगी।"

[9] The Tiger and the Hare. Taken from the Book ; "Romantic Tales of the Panjab" by Charles Swynnerton. 1903.

चीता बोला — "नहीं नहीं। मैं अपना खाना खाने के लिये अपने पंजे और दॉत इस्तेमाल करना चाहता हूॅ।"

जानवर बोले — "पर ईश्वर का कहना है कि आशा नहीं छोड़नी चाहिये।"

चीता बोला — "पर उसने साथ में यह भी तो कहा है कि हर एक को अपनी रोटी अपने आप ही कमानी चाहिये।"

जानवरों की बहुत जिद के बाद चीता इस बात पर राजी हो गया। उसने उनसे वायदा किया कि वह उस दिन से अपनी मॉद में ही रहेगा। उधर जानवर भी रोज अपने समूह में से एक जानवर चुन कर चीते के पास भेज देते।

सब कुछ ठीक ठाक चल रहा था। एक दिन एक मादा खरगोश की बारी आयी तो उसने साफ मना कर दिया कि वह चीते के पास नहीं जायेगी। वह अपनी ज़िन्दगी खुद जीना चाहती है। दूसरे जानवरों ने उसे बहुत समझाया पर सब बेकार। वह नहीं गयी।

दोपहर को **12** बजे चीते के खाने का समय होता था। वह अपने खाने का इन्तजार कर रहा था और अभी तक कोई जानवर उसके पास आया नहीं था।

एक बजा, दो बजे, तीन बजे। अचानक से मादा खरगोश उठी और बोली — "ठीक है मैं जा रही हूॅ।" और वह चीते की मॉद की तरफ चल दी।

जब वह चीते की मॉद के पास पहुॅची तो उसने देखा कि गुस्से में भरा हुआ चीता अपने पंजों से जमीन खुरच रहा था। जैसे ही उसने मादा खरगोश को अपनी मॉद की तरफ आते देखा तो बोला — "यह कौन सी मादा खरगोश है जिसने चीते को इतना इन्तजार कराने की हिम्मत की।"

मादा खरगोश तुरन्त बोली — "पर मेरे पास इस देर से आने की सफाई है।

"क्या सफाई है?"

मादा खरगोश बोली — "असल में आज मेरी नहीं बल्कि मेरे भाई के आने की बारी थी। मैं तो बहुत पतली दुबली सी हूॅ पर मेरा भाई बहुत मोटा है। मेरा भाई आपके घर की तरफ आ रहा था कि रास्ते में उसे एक दूसरा चीता मिल गया। वह उसे खाना चाहता था। यहॉ तक कि उसने उसे पकड़ भी लिया था।

पर मैं बीच में आ गयी। मैंने उस चीते से कहा — "यह तुम्हारा राज्य नहीं है। यह तो एक दूसरे चीते का राज्य है।"

तो वह बोला — "जाओ तुरन्त जाओ और उस दूसरे चीते को बुला कर लाओ। हम दोनों लड़ कर यह निश्चय करेंगे कि यह राज्य किसका है।"

सो अब मैं यहॉ आपके पास उसकी यह चुनौती ले कर आयी हूॅ। चलिये और चल कर हमारे उस दुश्मन को मार दीजिये।"

यह सुन कर तो चीता बहुत गुस्से में भर गया। उसने मादा खरगोश से कहा — "यह राज्य मेरा है और मेरा ही रहेगा। चलो मुझे तुम उस दूसरे चीते के पास ले चलो।" चलते चलते वे दोनों चीते को देखते जा रहे थे।

जब वे चलने लगे तो कुछ दूर के बाद ही मादा खरगोश कुछ डरी हुई सी दिखायी देने लगी। वह कुछ सिकुड़ गयी और एक झाड़ी में छिपने लगी तो चीते ने पूछा कि क्या बात है वह ऐसे बर्ताव क्यों कर रही है।

मादा खरगोश बोली — "क्योंकि मुझे बहुत डर लग रहा है क्योंकि उस दूसरे चीते की मॉद तो सामने ही है।"

चीता अपने सामने इधर उधर देखता हुआ बोला — "कहॉ कहॉ। कहॉ है वह। मुझे तो कोई मॉद दिखायी नहीं दे रही।"

मादा खरगोश बोली — "अरे वह रही सामने। क्या आपको दिखायी नहीं दे रही।"

"नहीं मुझे तो दिखायी नहीं दे रही। तुम आगे चल कर मुझे उसकी मॉद दिखा दो न।"

"मैं आपको वहॉ तक ले तो जा सकती हूॅ पर तभी जब मुझे आप अपनी बगल में दबा कर ले चलें तो।"

सो चीते ने मादा खरगोश को उठा कर अपनी बगल में दबा लिया और ले चला। वह मादा खरगोश के बताये रास्ते पर चलता

जा रहा कि अचानक उसने अपने आपको एक बड़े से कुँए के सामने पाया।

मादा खरगोश बोली — "यही है दूसरे चीते की मॉद। आप इसमें अन्दर झॉक कर देखिये तो वह आपको इसमें नजर आ जायेगा।"

सो वह कुँए के किनारे तक गया और उसके अन्दर झॉका।

जैसे ही उसने उसमें झॉका तो उसमें उसे अपनी परछाईं दिखायी दी तो वह समझा कि वह दूसरा चीता वहीं है। साथ में उसने अपनी बगल में दबी हुई मादा खरगेश की परछाईं भी दिखायी दी जिसे देख कर उसे लगा कि उस दूसरे चीते ने मादा खरगोश के भाई को पकड़ रखा है।

कुँए वाले चीते को देख कर उसने अपनी बगल में पकड़ी मादा खरगोश को तो छोड़ दिया और दूसरे चीते से लड़ने के लिये कुँए में कूद पड़ा। मादा खरगोश तो तुरन्त ही वहॉ से भाग गयी और चीता कुँए में कूदते ही उसके पानी में डूब गया और कुछ देर बाद मर गया।

मादा खरगोश यह अच्छी खबर ले कर जब जानवरों को सुनाने पहुँची तो सब जानवर उसे ज़िन्दा आया देख कर आश्चर्यचकित रह गये। फिर उसने सबको बताया कि किस तरह उसने चीते को मार डाला।

यह सुन कर जंगल के सारे जानवरों ने मिल कर बहुत आनन्द मनाया और मादा खरगोश को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

Stories of “Lion and Rabbit Like Stories”

1. A Rabbit and a Lion
2. Tiger in the Well
3. The Cunning Rabbit
4. The Squirrel and the Lion
5. The Baboon, the Monkey and the Fox
6. Singh Raja and Cunning Little Jackals
7. The Tiger and the Hare

Books in "One Story Many Colors" Series

1. Cat and Rat Like Stories (20 stories)
2. Bluebeard Like Stories (8 stories)
3. Tom Thumb Like Stories (12 stories)
4. Six Swans Like Stories
5. Three Oranges Like Stories (9 stories)
6. Snow White Like Stories
7. Sleeping Beauty Like Stories
8. Ping King Like Stories – 3 parts
9. Puss in Boots Like Storie (15 stories)
10. Hansel and Gratel Like Stories (4 stories)
11. Red Riding Hood Like Stories
12. Cinderella Like Stories in Europe (14+11 stories)
12. Cinderella in the World (21 stories)
13. Rumplestiltuskin Like Stories (22 stories)
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories (4 stories)
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Lion and Man Like Stories (14 stories)
17. Pome and Peel Like Stories (6 stories)
18. Soldier and Death Like Stories
19. Tees Maar Kahan Like Stories (11 stories)
20. Lion and Rabbit like Stories
21. Frog Princess Like Stories (7 stories)

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर, कैनेडा
2022